वार्तालाप नं.495, लखनऊ-1, (उत्तर प्रदेश) दिनांक 18.01.08
Disc.CD No.495, dated 18.01.08 at Lucknow-1, (Uttar Pradesh)

समयः 00.00-01.35

जिज्ञासुः – आपने बताया कि तीन बाप हैं तो सतयुग में एक बाप होते हैं, रावण राज्य में दो बाप और संगमयुग में तीन बाप। तो सतयुग में एक बाप ह□और रावण राज्य में दो बाप। तो रावण राज्य में दो बाप कौनसे और संगमयुग में तीन बाप कौनसे? ये समझ में तो आया लेकिन वो समझ में नहीं आया कि अलौकिक बाप कौन ह? पारलौकिक तो समझ में आया।

बाबा – जो अलौकिक ह□इस लोक का नहीं ह□ पार लोक का भी नहीं ह□बीच में लटका हुआ ह□

जिज्ञासु – वो कौन ह?

बाबा – बेसिक नॉलेज में गये?

जिज्ञासु – हाँ जी गये।

Time: 00.01-01.35

Student: You said that there are three fathers; so [everyone has] one father in the Golden Age everyone has; two fathers in the kingdom of Ravan and three fathers in the Confluence Age. So, there is one father in the Golden Age and two fathers in the kingdom of Ravan. So, which two fathers do we have in the kingdom of Ravan and which three fathers do we have in the Confluence Age? I understood this, but I did not understand who the alokik father is? I understood about the *Paarlokik* Father (i.e. God).

Baba: The *alokik* one does not belong either to this abode or to the abode which is beyond (parlok); he is hanging in between.

Student: Who is he?

Baba: Have you been in basic knowledge?

Student: Yes, I had been.

बाबा – उस से पूछा इस लोक में बाप कौन ह?

जिज्ञासु – वहाँ तो मैं ये समझता था कि शिव सुप्रीम सोल इनमें प्रवेश हैं।

बाबा – सुप्रीम सोल वो तो कहते हैं लेकिन वो तो बात गलत हैं। सुप्रीम सोल जब प्रवेश करता ह□तो जिसमें प्रवेश करता ह□उसको अपनी सुध-बुध रहती ह□क्योंकि सुप्रीम सोल तो हल्का-फुल्का ह□ उसको सूक्ष्म शरीर होता ही नहीं। तो सूक्ष्म शरीर का दबाव पड़ता ही नहीं और गुल्जार दादी के अंदर तो सूक्ष्म शरीरधारी प्रवेश करता ह□तो दवाब पड़ता ह□वो अपने स्वरूप को भूल जाती ह□ वही अलौकिक बाप ह□

Baba: Did you ask them who the father in this world is?

Student: There I used to think that the Supreme Soul Shiv has entered this one.

Baba: They say about the Supreme Soul, but that is wrong. When the Supreme soul enters, then the person in whom He enters is conscious because the Supreme Soul is very light. He does not have a subtle body at all. So, there is no pressure of the subtle body at all. And because a subtle bodied [soul] enters Gulzar Dadi, he exerts a pressure; she forgets about her own form. He (i.e. the one who enters her) is the *alokik* father.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 11.02-11.40

जिज्ञासुः- गुवाहाटी आसाम में कामाख्या मंदिर जो बना हुआ उसका महिमा का क्या राज है? ब्रह्मपुत्रा नदी के किनारे ही क्यों बनाया गया?

बाबा – कामनाओं का आख्यान किया है। अब यहाँ कामनाओं में रमण करना है या इच्छा मात्रम् अविद्या बनना है? यहाँ तो इच्छा मात्रम् अविद्या बनना है।

Time: 11.02-11.40
Student: What is the secret behind the glory of the *Kamakhya* temple situated at Guwahati in Assam? Why was it built only on the banks of the river Brahmaputra?
Baba: Desires (*kaamnaen*) have been described (*aakhyaan*) . Do we have to now be delighted in desires or do we have to become *ichcha maatram avidya* (a stage where we are without a trace of the knowledge of desire)? Here we have to become *ichcha maatram avidya*.

समयः 11.41-12.10

जिज्ञासुः- बाबा शंकर जी को काली माँ के पाँवों के नीचे क्यों दिखाया?

बाबा- इसलिए दिखाया कि शंकर तो विनाश करता नहीं है। विनाश तो शक्तियाँ करती हैं तो जो शक्ति। शक्तियाँ भी तो नम्बरवार हैं ना। तो जो शक्ति सबसे ज्यादा विनाश में सहयोगी बनती है महाकाली। तो उसके रास्ते में रोड़ा नहीं बनते आराम से लेट जाते हैं तो अपना काम करते चले जाओ। काम तो हमारा ही हो रहा हैं ना तो विरोध क्यों करे?

Time: 11.41-12.10
Student: Baba, why has *Shankarji* been shown below the feet of Mother Kali?
Baba: He has been shown that way because Shankar does not bring destruction; the *shaktis* destruction, so the *shakti* ….. *Shaktis* are also *number wise*, aren't they? So, the *shakti*, i.e. Mahakali, who becomes most cooperative in the task of destruction; he does not become an obstacle in her path; he lies down comfortably; (he tells her:) 'keep on doing your work.' (He thinks:) 'my job is being done (by her); so why should I oppose'?

समयः 12.15-12.28

जिज्ञासुः- बाबा ये जो चार वेद लिखे गये वो कौनसे युग में लिखे गये?

बाबा - द्वापरयुग के आदि में ।

Time: 12.15-12.28
Student: Baba, in which Age were these four Vedas written?
Baba: In the beginning of the Copper Age.

समयः 19.34-22.10

जिज्ञासुः- बाबा किसी आत्मा की सेवा कर रहे हैं उस आत्मा में मान लो कई-2 आत्मा प्रवेश करती हैं। कोई ईविल सोल भी है, देवात्मा भी है, कोई कमसी-2 आत्मा है।

बाबा – अच्छा। सोल प्रवेश करती है, वो देवात्मा भी है?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु – कोई-2 आत्मा प्रवेश करती ह मान लो अच्छा करती ह कभी गलत करती ह तो ऐसी आत्माओं को सेवा करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए? वो कोर्स करना चाहती ह मगर सुनना चाहती ह ज्ञान को, उस समय हमें क्या करना चाहिए? उसकी सेवा करनी चाहिए कि नहीं करनी चाहिए?

बाबा – क्यों नहीं करनी चाहिए? वो आत्मायें नहीं हैं?

Time: 19.34-22.10
Student: Baba, suppose we are serving a soul; suppose many souls enter the body of that soul. There is an evil soul; there is a deity soul; there are many kinds of soul.
Baba: I see. Can the soul that enters also be a deity soul?
Student: Some souls enter; suppose it behaves nicely; sometimes it also acts in a wrong manner; so, should we serve such a soul or not? It wants to undergo course; it wants to listen to knowledge; so, what should we do at that time? Should we serve such souls or not?
Baba: Why shouldn't you [do service]? Are they not souls?

जिज्ञासु – आत्मा में दूसरी-2 आत्मा प्रवेश करती हैं कभी कुछ हत्यायें कर देती हैं, उल्टा-सुल्टा बोल भी देती हैं।

बाबा- वो अपना हिसाब-किताब पूरा नहीं करेगी?

जिज्ञासु – तो वो जो कोर्स कराने वाली निमित्त आत्मा कराती रहे?

बाबा- कोर्स अगर वो करती ह ठीक से करती ह नियमपूर्वक, तो कराना ह नियमपूर्वक नहीं करती ह हड़कम्प मचाती ह तो जो बाबा ने बोला ह वो करना ह बाबा ने तो बोला ह जो आत्मायें नियम के बरखिलाफ चल पड़ती हैं, हाथापाई करे ,मारपीट करे तो उनको बाँध कर के ड़ाल दो।

जिज्ञासु- ड़ाल दो कि सुनाते रहे?

बाबा – सुनाते रहे वो पिटाई करना शुरू कर देंगे तब क्या करेंगे?

Student: Other souls enter a soul and sometimes they murder someone, they speak in a wrong manner.
Baba: Will they not clear their karmic accounts?
Student: So, should that soul instrument for giving course continue (to narrate the course)?
Baba: The course should be given if it undergoes the course properly, as per rules. If it does not follow the rules, if it creates disturbances, then we should do as Baba has asked us to do. Baba has said that the souls which act against the rules, if they start using physical force, if they start beating, then tie them up.
Student: Should they be tied up or should we continue to narrate to them?
Baba: If you continue to narrate and if he starts beating, then what will you do?

जिज्ञासु – अगर वो पाँव पकड़ के रोना शुरू कर दे और मान लो ऐसा कुछ करे तो?

बाबा – तो भी उनको ये बताओ तुम तो आत्मा रोने की क्या बात। लेकिन कभी-2 क्या होती हैं सूक्ष्म जो शरीरधारी आत्मा होती हैं तमोप्रधान होती हैं। वो कहने से कोई बात मानती नहीं हैं तो उनको कन्ट्रोल करना पड़ता हैं।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु- बाबा इससे कैसे बचे इसका उपाय क्या है? जो अनकन्ट्रोल हो रही है?

बाबा – कैसे करें? आत्मिक स्थिति में रहो तो प्रवेश नहीं करेगी।

जिज्ञासु –नहीं। जैसे उस आत्मा को कोर्स करा रहे हैं और कभी-2 बहुत अच्छा कोर्स करते है और कभी-2 उनकी ऐसी एक्टिविटी हो जाती है।

बाबा – तामसी बनेंगे तो एक्टिविटी खराब हो जायेगी।

Student: If he catches our feet and starts crying and suppose he starts doing something like this?
Baba: Even so tell him: you are a soul; there is nothing to cry in this. But sometimes, what happens is that the subtle bodied soul is *tamopradhan* (dominated by darkness and ignorance). It does not listen on being told. So, it has to be controlled.
Student: Baba, how do we save ourselves from the soul which is becoming uncontrollable?
Baba: How will you do? If you remain in soul conscious stage, it will not enter.
Student: No. For example, we are giving course to that soul; and sometimes they undergo the course very nicely and sometimes their activity is (unruly) like this.
Baba: If they become degraded, their activity will become bad.

जिज्ञासु – सुनाने वाली आत्मा अगर आत्मिक स्टेज में है तो वो आत्माये ठीक़ हो जयेंगे?

बाबा – जो आत्मिक स्थिति वाला है उस आत्मिक स्थिति में रहने वाले से जो प्रवेश करने वाली आत्मा है आँख ही नहीं मिलायेगी।

जिज्ञासु- बाबा ये आत्मायें प्रवेश कर के सेवा भी कराए लेती है या बापदादा ही सेवा कराते हैं?

बाबा- ब्रहमा की आत्मा है वो खुद ही प्रवेश कर के सेवा करती है। जब उनकी बुद्धि में ज्ञान बैठेगा तो सेवा करेगी। ज्ञान उनको नहीं बैठेगा तो डिससर्विस भी करेगी।

Student: If the soul that narrates is in a soul conscious stage, then will those souls become alright?
Baba: The one who is in a soul conscious stage; the soul that enters will not see eye to eye the soul which is in soul conscious stage.
Student: Baba, do these souls enter and enable us to do service or does Bapdada only enable us to do service?
Baba: Brahma's soul himself enters and serves; when the knowledge fits in his intellect, he will do service. If the knowledge does not fit (in his intellect) then he will do disservice as well.

समयः 22.13-24.00

जिज्ञासुः- बाबा ने कहा की गीता पाठशालाओं में भाई लोग मतलब माताओं-कन्याओं को कोर्स नहीं करा सकते, और मातायें माताओं को कराये और पुरूष पुरूषों को ही कराये। अगर मान लो भाई लोग बाहर गये सर्विस क्षेत्र पर और मातायें ही हैं केवल वहाँ पर अगर भाई लोग आ जाये तो गीता पाठशालाओं में तो कोर्स कौन करायेगी?

बाबा – कोर्स कौन करायेगी? मातायें-कन्याये कोर्स नहीं कराती है?

जिज्ञासु – बाबा ने कैसेट में ये बोल दिया ना कि माता माता को कराये और भाई भाई को कराये।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा- हाँ, तो?

जिज्ञासु- मातायें अगर गीता पाठशाला में अकेली ह उस समय और बाहर से कोर्स करने वाले अगर भाई लोग आ जाये तो कोर्स कौन करायेगा?

बाबा – अकेली ह तो पड़ोस से माताओं को बुला लो।

जिज्ञासु – दूसरी माता को बुलाकर करा सकती ह अकेली माता नहीं करा सकती ह

बाबा – ठीक हैं।

Time: 22.13-24.00

Student: Baba has said that brothers cannot give course to the mothers and virgins at the *Gitapathshalas*. And mothers should give course to the mothers and men should give course only to men. Suppose, brothers (of that *gitapathshala*) have gone in the field of service and there are just mothers (at the *gitpathshala*) and suppose (new) brothers come to the *gitapathshala*, who will give them course?

Baba: Who will give them course? Don't the mothers and virgins give course?

Student: Baba has said in the cassette, hasn't he? Mothers should give course to the mothers and brothers to brothers.

Baba: Yes, so what?

Student - If mothers are alone in the *gitapathshala* at that time and if brothers come from outside to take course, who will give them course?

Baba: If she is alone, call mothers from the neighbourhood.

Student: Can she give course by calling another mother? A single mother cannot give the course.

Baba: It is correct.

जिज्ञासु – अगर मान लो भाई ह वहाँ पर।

बाबा – भाई तो सब दुर्योधन-दु:शासन वो क्या कोर्स करायेंगे, क्या फोर्स भरेंगे?

जिज्ञासु – कई आत्मायें ऐसी होती हैं कि मातायें ह ल नहीं कर पा रही ह मान लो । तो उसमें भाई क्या कर सकते ह माना माता ह ल नहीं कर पा रही ह तो ऐसे क्वालिटी की आत्मायें आने वाली हैं जहाँ भाई लोग आयें हैं।

बाबा – तो माता का युगल तो ह

जिज्ञास- हाँ, युगल तो हैं।

बाबा - तो दोंनो मिलकर कर के करायें ।

जिज्ञासु – दोंनो बठ जाये साथ में करा सकते हैं।

बाबा – हाँ जी।

Student: Suppose a brother is present there.

Baba: All brothers are Duryodhans and Dushasans; what course will they give? What force will they fill?

Student: Many souls are such that the mothers are unable to handle, then what can the brothers do in that situation? I mean to ask if mothers are unable to handle, then if such quality souls come; suppose brothers have come.

Baba: So, there is the husband of the mother, isn't he?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: Yes, the husband is there.
Baba: So, let both of them give the course together.
Student: Both should sit together and give the course together/ can both of them sit together and give the course?
Baba: Yes.

जिज्ञासु – और माता कन्याओं को भी करा सकते हैं और भाईयों को भी अगर माता साथ में बठी ह□ तो। कोई ऐसी आत्मा आती ह□ जो मातायें ह□ल नहीं कर पा रही ह□ तो क्या भाई उसको माता के साथ, युगल के साथ बठ के करा सकते ह?

बाबा – जब माता बठी ह□ और माता वास्तव में उसकी मुट्ठी में नहीं ह□ पुरूष के मुट्ठी में। तो करा सकती ह।

जिज्ञासु- भाई करा सकते हैं उस समय?

बाबा – कोई-2 भाई ऐसे होते ह□ अपनी पूरी मुट्ठी में ही रखते हैं। जा चाहेंगे वो चलायेंगे।

जिज्ञासु – माता- कन्याओं को।

बाबा – हाँ।

जिज्ञासु – वो नहीं करा सकते हैं?

बाबा- नहीं।

Student: And mother can give the course also to the virgins. And if the mother is sitting with them, can they give course to the virgins and mothers and to the brothers? Suppose a soul comes whom a mother is unable to handle; then can a brother sit with the mother (i.e. his wife) and give course?
Baba: If the mother is sitting and if the mother is not under his control, under the control of the man, then she can give course.
Student: Can the brother give course?
Baba: There are some such bothers who keep them under their control. They will make them act as they wish.
Student: The virgins and mothers.
Baba: Yes.
Student: Can't they give course?
Baba: No.

समयः 28.42-29.00

जिज्ञासुः- बाबा एक आत्मा को ज्ञान मिला ह□ और काली जी का मंदिर ह□ घर में। अब उसको पूजा करने में मन नहीं लगता। तो काली माता का क्या किया जाये?

बाबा – काली माता को कोई दूसरों को दिया जाये। और क्या किया जाये?

Time: 28.42-29.00
Student: Baba, a soul received knowledge and there is a Kali temple at home; now he does not like to worship it. So, what should he do about (the idol of) Mother Kali?
Baba: He can give (the idol of) Mother Kali to others. What else can he do?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 29.05-30.48

जिज्ञासुः- बाबा विदेशी बच्चों को उठाने के लिए बाप विदेशी बन के आये हैं।

बाबा- विदेशी बच्चों को? स्वदेशी बच्चों को उठाने के लिए नहीं आये? हाँ, विदेशी बच्चे जो हैं उनके लिए तो विदेशी बने ही हैं लेकिन जो स्वदेशी बच्चे हैं वो भी तो अनेक प्रकार के हैं। उनसे मिलने के लिए नहीं आये हैं? सभी से मिलने के लिए आये हैं। और सब से मिलने के लिए ये जरूरी ह कि मर्यादा पुरूषोत्तम बन के न आ जाये। नहीं तो उनका कनेक्शन एक से ही रहेगा दूसरों को फायदा होगा ही नहीं। इसलिए बाप विदेशी बनकर के आये हैं।

जिज्ञासु – विदेशी बन के आये हैं, फिर ायरेक्ट किसे कहेंगे?

बाबा – ायरेक्ट ही विदेशी बन के आये हैं किसी के थ्रू थोड़े ही।

जिज्ञासु – तो आत्मा की कट उतरने पर ायरेक्ट बाप से सुन सकते हैं। फिर इस दोंनो में अंतर?

बाबा – आत्मा रूपी सुई की सारी कट उतरने पर, बेसिकली सारी कट उतरती हैं तो वो ायरेक्ट बाप को पहचान लेते हैं क्योंकि बुद्धि सूक्ष्म बन जाती हैं। और जब तक बुद्धि सूक्ष्म नहीं बनी ह आत्मिक स्थिति नहीं धारण की हैं, देहभान में रहते हैं तब तक उनको बाप की ायरेक्ट पहचान हो ही नहीं सकती। बाकी बाप तो विदेशी बनकर आया ह ह नहीं विदेशी। लेकिन विदेशी बनकर आया हुआ ह एक्ट ऐसी करते हैं।

Time: 29.05-30.48

Student: Baba, the Father has come in the form of a foreigner (*videshi*) in order to uplift the *videshi* children.

Baba: The *videshi* children? Has He not come to uplift the *swadeshi* children? Yes, He has become *videshi* for the *videshi* children, but even the *swadeshi* children are of many kinds; has He not come to meet them? He has come to meet everyone. And in order to meet everyone, it is necessary that He should not come as a *Maryada Purushottam* (best among all those who follow the code of conduct). Otherwise, He will have connection with only one; others will not be benefited at all. This is why the Father has come as a *Videshi.*

Student: He has come as a *videshi,* then whom will we call direct?

Baba: He has come directly as a *videshi* not through anyone.

Student: The souls can listen directly from the Father on the removal of the rust of the soul; then what is the difference between both of them?

Baba: When the rust of the needle-like soul is removed basically, then it recognizes the Father directly because the intellect becomes subtle. And until the intellect becomes subtle, until it achieves a soul conscious stage, as long as it is in body consciousness, they cannot recognize the Father directly. As for the rest, the Father has come in the form of a *videshi*; He is not (actually) a *videshi*. But He has come in the form of a *videshi*. He acts like that.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 30.50-32.07

जिज्ञासुः- साकार तन में बाप मिल जाये तो संतुष्टि हो गई। तो अब भगवान की पूजा-पाठ, जो अपना करते थे, नहीं मन लगता, ना समय मिलता। तो उनको ऐसे रखे हैं तो वो कोई अपराध हैं?

बाबा – जिस चीज की जरूरत होती ह वो रखी जाती ह। जिसकी जरूरत नहीं ह तो क्यों रखी जायेगी? जरूरत ह तो तब कोई चीज को रखता ह, बनाता ह।

जिसकी जरूरत ही नहीं ह फिर भी रखे हुए हैं माना मोह लगा हुआ हैं।

जिज्ञासु- नहीं, उनको तो समेट के एक जगह रख दिया ह। बाँध के एक जगह रख दिया हैं।

बाबा – बाँध के क्यों रख दोगे? जिनको जरूरत हो उनको दे दो।

Time: 30.50-32.07

Student: I have become satisfied meeting the Father in a corporeal body. So, now I do not like worshipping God; nor do I get time for it. So, we have kept it (i.e. the idols and pictures) just like that; is it an offence?

Baba: We keep something which we require. Why should we keep things which are not required? A person keeps or prepares something when he requires something. If someone continues to keep something which is not required, then it means that there is attachment.

Student: No, I have gathered everything and kept it in one place. I have packed it and kept it at one place.

Baba: Why do you keep it packed? Give it to someone who requires it.

जिज्ञासु – बाँध के रख दी तो कहाँ दी जायेइनका विचार क्या ह? जो मंदिर था वो काफी बड़ा मंदिर, सारा झोले में बाँध दिया लपेट कर के उसको।

बाबा- क्यों बाँधकर के रख दे? भक्तों की भक्ति पूरी होने दो ना। जो भगत ह उनकी भक्ति पूरी होने दो ।

जिज्ञासु – जो दूसरे चाहते हैं पूजना उनको दे सकते हैं क्या?

बाबा -क्यों नहीं दे सकते? उनकी भक्ति पूरी नहीं होने देना? भक्ति करने के लिए मना किया जाता हैं यहाँ?

जिज्ञासु - नहीं।

बाबा – फिर। जो भक्ति करते हैं उनको तो प्यारा लगता हैं उनको दे दो। बाँध के रख देने से क्या फायदा?

Another Student: She has packed it. She is thinking as to whom should she give it? The temple (i.e. the place of worship at home) was a considerably big one. She packed everything in a bag.

Baba: Why do you keep it packed? Let the devotees complete their *bhakti*. Let the devotees complete their *bhakti*.

Student: Can we give it to others who wish to worship?

Baba: Why can't you give it? Should they not complete their bhakti? Here, are they stopped from doing *bhakti*?

Student: No.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Then? Those who do *bhakti* will like those things. Give it to them. What is the use in keeping it packed?

समयः 32.10-33.17

जिज्ञासुः- बाबा गीतापाठशालाओं में कहा कि जो निमित्त इंचार्ज माता होती ह□ना तो उसको वहाँ रहना पड़ता ह□ तो बार-2 संगठन होते हैं, कहीं पर क्लास होती ह□ कहीं सेवा होती ह□ फिर वो तो माता वहाँ बंध के रह जायेगी।

बाबा – दो ह□ना। तो कभी माता चली जाये तो कभी पिता चला जाये।

जिज्ञासु – तो खाली भाई रह सकते ह□गीतापाठशालों में कन्यायें-मातायें पीछे से।

बाबा – तो दूसरी कोई बुर्जुग माता को बुला लो पड़ोस में से।

जिज्ञासु – तो भाई रह सकते हैं?

बाबा – हाँ, अपने अंदर कमजोरी दिखाई पड़ती ह□ पोतामेल दिखाई पड़ता ह□तो पड़ोस से कोई माता, बुर्जुग माता को बुलाया जा सकता ह□ना।

Time: 32.10-33.17

Student: Baba, it has been said that the mother who is instrument, who is in charge of *gitapathshala* has to remain there; As gatherings are organized frequently (at different places); classes are organized at some places, service is organized somewhere; so the mother will remain bound at *gitapathsala* (if she has to look after the *gitapathshala*).

Baba: There are two, aren't there? So, sometimes the mother (i.e. wife) can go, sometimes the father (i.e. the husband) can go.

Student: So, a brother can stay alone in the *gitapathshalas* and if some virgins or mothers come (when his wife has gone out)?

Baba: So, he can call a senior mother from the neigbourhood.

Student: So, can the brothers stay (alone at the *gitapathshala*)?

Baba: Yes, if there is any weakness within, if you see your *potamail*, then you can call a senior mother from the neighbourhood.

जिज्ञासु – अगर दोंनो युगल जाना चाहते ह□संगठन में तो कैसे होगा?

बाबा – दोंनो जाना चाहते हैं कि कोई बात ही नहीं। ईश्वरीय सेवा एक तरफ और चाहते हैं दूसरी तरफ।

जिज्ञासु – तो एक-2 ही जा सकते हैं।

बाबा – तो जाना चाहिए ना एक-2 को ।

जिज्ञासु – युगल अगर मान लो एक आउट ऑफ जाते ह□गीतापाठशालाओं से 10 दिन, 5दिन, 2दिन के लिए तो दोंनो एक साथ जायेंगे तो गीतापाठशाला में क्या होगा?

बाबा – क्यों जायेंगे एक साथ? घर में जो जिम्मेवारी ले के बैठे ह□सो कहाँ चली जायेगी?

जिज्ञासु – एक रहे तो एक जाये ।

बाबा – हाँ, बिल्कुल अच्छी बात हैं।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: If the husband and wife both wish to go to attend the gathering, then is it possible?
Baba: The question of both wanting to go together does not arise at alll. They have the service of God on one hand and on the other hand they want to go together! .
Student: So, they can go one by one.
Baba: They should go one by one.
Student: Suppose one of the spouses goes out of the *gitapathshala* for 10, 5, 2 days, what will happen to the *gitapathshala*?
Baba: Why will they go together? What about the responsibility that they have taken up at home?
Student: One of them should stay back and the other should go.
Baba: Yes, this is completely correct.

समयः 33.20-34.10

जिज्ञासुः – पंक्च्युअल समय में मुरली सुनने में जो नशा होता ह वो अमृतवेला में उठने में क्यों नहीं?

बाबा – ऐसा तो नहीं ह कि अमृतवेला कभी अच्छा ही नहीं होता था। जब शुरूआत में ज्ञान में आते हैं तो सतोप्रधान स्टेज होती ह फिर शूटिंग चालू होती ह दुनियाँ की हर चीज सतोप्रधान, सतोसामान्य, सतो, रजो, तमो से गुज़रती ह तो पुरूषार्थ भी चार अवस्थाओं से प्रसार होता ह ज्ञान भी चार अवस्थाओं से प्रसार होता हैं। अब उसमें ये बात जरूर ह कोई ज्ञानी आत्मायें, कोई पुरूषार्थी ऐसे होते हैं जितने ज्यादा विघ्न आते हैं उतना ज्यादा तीव्र पुरूषार्थ करते हैं। कोई फिर अलबेले हो जाते हैं, टूट भी जाते हैं।

Time: 33.20-34.10
Student: Why don't we feel the same intoxication in waking up at *Amritvela* which we experience while listening to the *Murli* punctually?
Baba: It is not as if the *Amritvela* was never good. In the beginning, when we enter the path of knowledge, it is *satopradhan*[1] stage . Then, the shooting begins. Everything in the world passes through *satopradharn, sato-samanya*[2]*, rajo*[3] *, tamo*[4]. So, the *purusharth* (spiritual effort) also passes through the four stages. The knowledge also passes through the four stages. Well, it is true that there are some knowledgable souls, some *purusharthis* (those who make spiritual effort) who do swift *purusharth* when they face more obstacles. Some then become careless and also break away.

[1] consisting in the quality of goodness and purity
[2] where there is ordinary goodness and purity)
[3] dominated by the quality of activity or passion
[4] dominated by ignorance and darkness

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 36.45-37.28

जिज्ञासुः- शास्त्रों में दिखाया है कि विष्णु ने चक्र से जो हैं, जब शंकर जी सती को ले के जा रहे थे तो उनके शव को खंड कर दिया, 51 खंड कर दिया तो 51 जो है वो उसका शक्तिपीठ बन गया।

बाबा – 51 खंड कर दिया नहीं। एक-2 कर के खंडित-2 हो कर गिरते रहे खंड़। शरीर के खंड-2 हो कर के जहाँ-2 भागते रहे एक-2 खंड गिरते रहे। ऐसी कथा बना दी है।

जिज्ञासु – उसका क्या यादगार है?

बाबा- वो देहभान गिरता रहा शक्ति का, शरीर नहीं गिरता रहा सड़-2 के। देहअभिमान गिरता रहा उसके शक्तिपीठ बनाये बाद में।

Time: 36.45-37.28

Student: It has been shown in the scriptures that when Shankarji was carrying (the body of) Sati (his wife), Vishnu cut her body into 51 pieces with his discus (*chakra*); so, those 51 pieces became *Shaktipeeth*.

Baba: He did not cut them into 51 pieces. The pieces kept breaking away from the body and continued to fall (on the ground) by themselves. The body broke into pieces and wherever he was running, pieces started falling one by one. Such a story was made up.

Student: What is its memorial?

Baba: The body consciousness of *shakti* continued to fall; the rotten (pieces of) body did not continue to fall; the body consciousness went on falling; *Shaktipeeth*s were established later on in its memorial.

समयः 50.05-51.10

जिज्ञासुः- कई भाई-बहन ज्ञान में पक्के चलते हैं। और उनका धंधा है मान लो दो रोटी पेट का। और उनके अंदर में ये खसोट चल रही हैं कि मान लो हम कोई दुकान में या सर्विस में कोई ऐसा काम कर रहे हैं जो श्रीमत के बाहर है लेकिन दो रोटी पेट के लिए करना पड़ता हैं। तो उनके दिमाग में चल रहा है कि पोतामेल अगर हम लिखेंगे तो ये लिखना पड़ेगा कि हमको ऐसा करना है वो वगैरा कर सकते है कि नहीं कर सकते? जैसे मान लो माल गया कुछ और, और दिया कुछ और।

बाबा- दुनियाँ के सब धंधे झूठे हैं या सच्चे हैं?

जिज्ञासु – झूठे हैं।

बाबा – तो जब दुनियाँ के सारे ही धंधे झूठे हैं तो झूठे धंधे तो करेंगे तो उसमें झूठ तो बोलना ही पड़ेगा। लेकिन औरों के मुकाबले झूठ नहीं बोलना चाहिए। अगर पूरा ही सच्चा बोलते रहेंगे तो सारा धंधा चौपट हो जावेगा।

जिज्ञासु – बाबा गुटखा, बीड़ी वगैरा बिक्री कर रहे है दुकान में।

बाबा- गुटखा, बीड़ी के लिए नहीं बोला। सिर्फ शराब के लिए बोला है कि शराब का धंधा छोड़ देना चाहिए। बाकी जो भी धंधे है वो चालू रखने में कोई इतना हर्जा नहीं हैं।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 50.05-51.10
Student: Many brothers and sisters follow the knowledge firmly. Suppose they are occupied in some business for the sake of earning money for two *roties* for the stomach. And they are confused in their minds that suppose they are doing any such work in the shop or service (job) which is against the *shrimat*…, but they have to do that for the sake of two *roties*. So, they are thinking that when they write *potamail*, then they will have to write that they have to do like this; can they do that or not? Suppose people seek some material and they give something else.
Baba: Are all the occupations of the world false or true?
Student: They are false.
Baba: So, when all the occupations of the world are false, we [too] are occupied in a false occupation, then we will have to speak lies. But we should not speak a lot of lies when compared to others. And if we keep speaking the complete truth, then the entire business will be in loss.
Student: Baba, if someone is selling *Gutkha* (some kind of tobacco preparation), *Biri* (a twist of tobacco rolled in a tobacco leaf), etc. in his shop….?
Baba: There is no mention about *Gutkha, Biri*, etc.; it has been mentioned only about wine that we should leave the business of wine. There is not much harm in practicing other occupations.

समयः 51.12-52.31

जिज्ञासुः- बाबा गीता के श्लोक आया ह□विभु शब्द उसका क्या अर्थ हैं?

बाबा – वि माना विशेष रूप से और वि माना विपरीत रूप से और भु माना होना। दुनियाँ में जो जन्म होता ह□उस जन्म के विपरीत जिसका जन्म हो वो ह□विभु। वि माना विशेष। जो दुनियाँ में जो सामान्य रूप से लोंगो के जन्म होते हैं पेट से, गर्भ से उसके मुकाबले जिसका विशेष जन्म हो उसको कहते ह□विभु। विशेष रूप से होने वाला और विपरीत रूप से होने वाला उसको कहते ह□विभु। उनका उल्टा अर्थ उन्होंने लगा दिया सर्वव्यापी। वो नहीं ह□उसका अर्थ। जबकि श्लोक आया ह□पूरा का पूरा न तद् भास्यते सूर्यो, न शशांको यद् गत्वा न निवर्तते तद् धाम परम मम्। वो खुद ही बता रहा ह□मैं परमधाम का रहने वाला हूँ तो विभु माना सर्वव्यापी कहाँ से हो गया।

Time: 51.12-52.31
Student: Baba, there is a mention of the word '*vibhu*' in a *shloka* in the Gita. What does it mean?
Baba: *Vi* means '*vishesh roop se'* (especially) and *vi* means '*vipreet roop se'* (in an opposite manner) and '*bhu*' means 'to happen'. *Vibhu* means the one who is born in a manner opposite to the births that take place in the world. *Vi* means *vishesh* (special). When compared to the ordinary way, people are born in the world through the womb; He is born in a special way. He is called Vibhu. The birth which takes place in a special manner and in an opposite manner is called *Vibhu*. They have inferred it in an opposite manner, as omnipresent (*sarvavyapi*). That is not its meaning. whereas there is an entire *shloka* – '*na tad bhasyate Suryo, na shashanko…..yad gatwa na nivartante tad dhaam parmam mam*. He is Himself telling us: I am a resident of the Supreme Abode. So, how can *vibhu* mean omnipresent?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 54.05-55.13

जिज्ञासुः – बाबा जैसे यहाँ पर नई-2 आत्मायें आती हैं। भट्ठी करके और मिलती हैं, संगठन में आती हैं। तो ये भी तो नया संगठन हुआ।

बाबा – नया संगठन तो हुआ, लेकिन जो आखरी परीक्षा है नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा उसमें पास होने वाले कितने हैं? लालने के पाँव पालने में दिखाई पड़ते हैं। दिखाई पड़ते हैं या नहीं? जो अष्टदेवों वाली आत्मायें होगी वो जब से ज्ञान में आई होंगी तब से ही लेकर के वो नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा दिखाई दे रही होंगी। एक बाप दूसरा न कोई - ये उनके जीवन में दिखाई दे पड़ रहा होगा। न अपने लौकिक माँ-बाप की चिंता, न संबंधियों की चिंता, न अपने देह की चिंता, न देह के कपड़ों की चिंता, न देह के खाने-पीने की चिंता, न मकान की चिंता। कोई स्पेशेलिटी उनको नहीं चाहिए। एक बाप दूसरा न कोई।

Time: 54.05-55.13

Student: Baba, for example, new souls come here; they meet [Baba] after *bhatti*, they come to the gathering; so this is also a new gathering (*naya sangathan*).

Baba: It is no doubt a new gathering, but how many (of them) are going to pass in the last exam – *nashtomoha smritilabdha* (the stage of conquering all kinds of attachments and remaining in remembrance of one)? The character of a person can be seen in the cradle itself. Can it be seen or not? The souls of the eight deities, ever since they entered the path of knowledge they will be seen to be '*nashtomoha smritilabdha'*. 'One father and no one else', this will be visible in their life. They neither worry about their *lokik* parents, nor the relatives, nor the body nor the clothing for the body, nor the food for the body, nor the house. They do not want any specialty. One Father and no one else.

समयः 55.52-56.50

जिज्ञासुः- जल चढ़ाते हैं शिव को काँवड़ से इसका राज क्या हैं?

बाबा- शिवलिंग को जल चढ़ाते हैं या शिव को जल चढ़ाते हैं?

जिज्ञासु – शिवलिंग को।

बाबा – लिंग को जल चढ़ाते हैं। शिव को तो नहीं चढ़ा पाते हैं? शिव तो बिंदी है। तो जो लिंग है वो किसकी यादगार है? साकार की यादगार। वो साकार, जब संगमयुग होता है तो संगमयुग में बेसिक नॉलेज में आता है या नहीं आता है? आता है। जब बेसिक नॉलेज में आता है तो बेसिक वाले जो भगत हैं, जो भगवान बाप को नहीं पहचानते हैं, वो भगत उस साकार के ऊपर ज्ञान जल चढ़ाते हैं कि नहीं? चढ़ाते हैं। उसी की यादगार है।

Time: 55.52-56.50

Student: What is the secret behind offering water on Shiv through a *kamvar*[5]?

Baba: Is the water poured over *Shivling* or over Shiv?

Student: Over *Shivling*.

---

[5] a bamboo or other pole having slings or baskets suspended at each end for carrying loads

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Water is poured over the *ling*. Are they able to pour over Shiv? Shiv is a point. So, whose memorial is the *ling*? It is a memorial of the corporeal one. During the Confluence Age, does the corporeal one enter the path of basic knowledge or not? He does. When he comes in basic knowledge, the devotees who follow the basic knowledge, those who do not recognize God, the Father, do those devotees pour water of knowledge on that corporeal (medium) or not? They do. It is a memorial of that.

समयः 59.38-01.00.47

जिज्ञासुः बाबा जी से जिसकी शादी-ब्याह हो गई पहले और उनका व्यवहार पड़ा है तो उनको लौटायें या ना लौटायें?

बाबा – जो लिया है सो देना नहीं चाहिए?

जिज्ञासु – जी से मान लो गीता पाठशाला में निमित्त है और उनकी बिटिया शादी की हुई है कोई भी। वो दुबारा मिलने-जुलने आती है जब बिदा होती हैं तो उनके हाथ में रूपया देना, तिलक करना, कपड़े-वपड़ा देना, मिठाई-वठाई देना, लेना-देना चाहिए कि नहीं देना चाहिए?

बाबा- तोड़ निभाने के लिए मना कर दिया है क्या बाबा ने? लौकिक अलौकिक में तोड़ नहीं निभाना है?

जिज्ञासु – निभाना है।

बाबा – निभाना है तो बनना है। नहीं तो वो नाराज हो जायेंगे, आयेंगे नहीं। जब तक ज्ञान में नहीं चलते है तब तक लीपापोती करते रहो।

Time: 59.38-01.00.47

Student: Baba, suppose a marriage has already taken place in the family and we have accepted some gift (from someone); so should we give them something in return (on any other occasion) or not?

Baba: Should you not return whatever you have taken?

Student: Suppose, someone is an instrument in a *gitapathshala* and one of their daughter is married ; she comes again to meet the parents; when she is seen-off, should we give her money, apply *tilak*, give clothes, give sweets, should we give and take or should we not give?

Baba: Has Baba stopped you from maintaining the relationships? Should you not maintain a balance between the *lokik* and *alokik* life?

Student: We have to.

Baba: If we have to maintain, we have to do it. Otherwise, they will get angry; they will not come. Until they start following the path of knowledge we have to maintain the relationship.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info